इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

श्री राधा महाविद्या साधना

राधाष्टमी - 19 सितम्बर

श्री राधा विशेष पूज्य और **उपास्य** इसलिये हैं क्योंकि **श्रीकृष्ण** को **जगत् पिता** और **श्रीराधा** को जगत् **माता** माना गया है और **माता** तो पिता से **सौगुना** अधिक **वन्दनीय** होती हैं। जिस **शक्ति** ने **योगेश्वर श्रीकृष्ण** को भी अपने **अधीन** कर लिया हो, उस **शक्ति की साधना** करने से **साधक** को **वशीकरण साधना** में **सिद्धि** अवश्य प्राप्त हो जाती है। जो **कार्य** बहुत काल तक **श्रीकृष्ण** की **आराधना** के बाद **सिद्ध** नहीं होता है वह **श्रीराधा** की **उपासना** से बहुत शीघ्र **सम्पन्न** हो जाता है।

पितरेश्वर दोष मुक्ति साधना

पितृ पक्ष - 26 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक

इस **साधना** को **सम्पन्न** करने से हमारे **पितरेश्वर शक्ति** एवं **सिद्धि** के निश्चित स्वरूप बन जाते हैं। यदि इनकी स्थिति **उत्तम** हो तो ये ही **स्वास्थ्य, वायु, गर्भ** आदि **कार्यों** के **नियंत्रक** बन जाते हैं, वे अपनी **शक्ति** से आने वाली **घटनाओं** को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, यदि उनकी **पूर्ण कृपा** हो तो वे अपनी **संतानों** को ऐसा मार्ग दिखा सकते हैं, जिसमें कम से कम **बाधायें** हों। ऐसे कार्य पर **प्रवृत्त** कर सकते हैं, जिससे **सम्पूर्ण उन्नति** हो। **व्यक्तित्व** में तेज उत्पन्न कर सकते हैं, जीवन में **रस, माधुर्य** एवं **सौन्दर्य** घोल सकते हैं, उनके लिये कोई भी कार्य **असम्भव** नहीं रहता है, आवश्यकता केवल इस बात कि है, कि वे पूर्ण रूप से **प्रसन्न** हों और उनकी **पूजा, साधना** नियमित रूप से की जाय।

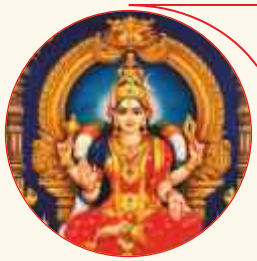

भोगस्थ ब्राह्मणी भुवनेश्वरी साधना

भुवनेश्वरी जयंती - 23 सितम्बर

भगवती भुवनेश्वरी का प्रत्येक स्वरूप **साधक** के लिये **नवीन चिन्तन** युक्त है। **विश्वोत्पत्ति** के पश्चात् जब **शक्ति त्रिभुवन** का **संचालन** करती हैं, तब उसे **भुवनेश्वरी** के रूप में **सम्बोधित** किया गया है। **भुवनेश्वरी साधना** अत्यन्त **महत्वपूर्ण** है, क्योंकि मात्र **भुवनेश्वरी साधना** से ही जीवन के सभी कार्य **सहज** संभव हो सकते हैं। **दस महाविद्या साधना** क्रम में **भोगस्था ब्राह्मणी भुवनेश्वरी साधना** ऐसी **अद्वितीय साधना** है, जिसे सम्पन्न कर साधक **श्रेष्ठ व्यक्तित्व** बनने की **योग्यता** प्राप्त करने की क्रिया में **संलग्न** हो जाता है।

दुर्गतिनाशक महानवमी साधना

शारदीय नवरात्रि - 11 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक

पूरे भारत वर्ष में **शारदीय** और **वासन्तिक दो नवरात्रि** मनायी जाती है। **जीवन** के अभाव **दरिद्रता, पाप-ताप, कष्ट-पीड़ा, डर-भय** आदि अनेक प्रकार के **दुःख** रूपी **स्थितियों** से निजात पाने हेतु **नवरात्रि** में **नव दुर्गा** की **आराधना** की जाती है। **भगवती दुर्गा जी** का नाम **सुबह** स्मरण करने से सारे दिन के **विपत्तियों** से हमारी रक्षा होती है। **नवरात्रि साधना** का **श्रेष्ठ** और **दुर्लभ** समय **दुर्गा अष्टमी** और **महानवमी** के **संध्या** समय होता है, उसी समय **भगवती जगदम्बा** के **सिद्धदायिनी** स्वरूप का **अविर्भाव** समय होता है और **साधकों** को प्रत्यक्ष अनुभव भी होता है। **दुर्गतिनाशनी सिद्धिदायनी जगदम्बा दुर्गा की आराधना** करने से व्यक्ति एक **सद्गृहस्थ जीवन** के अनेक **शुभ लक्षणों-धन, ऐश्वर्य, पत्नी, पुत्र, पौत्र** व **स्वास्थ्य** से युक्त हो जीवन के **अंतिम लक्ष्य मोक्ष** को भी **सहज** ही प्राप्त कर लेता है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।